International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2017; Page No. 51-53

बोधिसत्व बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर : एक प्रकाश–स्तंभ

प्रो0 राजकुमार लहरे

सहायक प्राध्यापक (हिन्दी), शासकीय पी0डी0 वाणिज्य एवं कला महाविद्यालय, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

भारतीय इतिहास का दैदिप्यमान नक्षत्र, ज्ञान के पर्याय, मानवता के समर्थक, समतावादी, सत्य के सजग प्रहरी, समाज में पिछड़ों, दलित, शोषित तथा मजदूरों के सच्चा हितैषी, भारत का संविधान निर्माता, कोमल हृदय सम्राट तथा बहुमुखी प्रतिभा के धनी, समाजसेवक, बाबा गुरुघासीदास जी के विचार मानव–मानव एक समान एवं सादा जीवन उच्च विचाार को अपना आदर्श बनाने वाला, भारत–रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी का विचार आज के समसामयिक संदर्भ में अक्षरशः प्रासंगिक है। तथाकथित ज्ञानी समुदाय, उच्चवर्ग द्वारा समाज को ज्ञान–दासता के भॅवरजाल में उलझाकर रखनेवालों को सद्मार्ग सुझाकर अपना प्रतिभा का लोहा मनवाया।

विकास के पुरोधा डॉ अम्बेडकर ने सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सॉस्कृतिक आदि समता के लिए हमेशा समाज में गरीब, मजदूर, पिछड़े, आदिवासी तथा निम्न स्तरीय जीवनयापन करने वालों के प्रति भारत का संविधान निर्माण करते समय ध्यान रख आरक्षित किया। जिससे व्यक्ति को समान व सर्वांगीण विकास के लिए अवसर मिल सके तथा अहिंसा, सेवा, त्याग, समर्पण का संदेश देते हुए कहा कि शिक्षित बनो, संगठित रहो, संघर्ष करो। इसके लिए जागना होगा, जिससे सदियों के गुलामगिरी से मुक्ति मिल सके। वर्ग, रंग, वंश, सम्प्रदाय, धर्मगत– जाति–पाति, छुआछूत, उॅच–नीच, भेदभाव को इसमें बाधक मानते हुए शिक्षा ज्ञान को विकास के लिए सार्थक व अनिवार्य आधार बताया। जिससे सबका विकास, सबके साथ हो सके। संभवतः इसीलिए जीवन के अंतिम पड़ाव में जरुरतमंदों को सही दिशा–निर्देश के लिए बुध्द हो, आकाशदीप की भॉति प्रकाश–स्तंभ बन आलोकित करता रहा है।

मूल शब्द : संविधान, आरक्षण, ज्ञान–दासता, प्रकाश–स्तंभ, शिक्षा, बुध्दत्व।

1. प्रस्तावना

व्यक्ति का जन्म उसके वश की बात नही, परन्तु कर्म करने की योग्यता व शैली से जीवन में त्याग और परिश्रम की पूँजी व ईमानदारी पूर्वक लक्ष्य की दिशा में लगकर कोई भी व्यक्ति महानता के शिखर पर पहूँच सकता है। नवबुद्ध, सिम्बल ऑफ नालेज, दलितों के मसीहा, भारतीय संविधान निर्माता, भारत रत्न बाबा साहब डॉ भीमराव अम्बेडकर जी का जन्म तत्कालीन सामाजिक परिवेश में अछुत समझे जाने वाले महार जाति में पिता सूबेदार रामजी और माता भीमा बाई के घर 14 अप्रैल 1891 को महूँ मध्यप्रदेश में हुआ। 'होनवार बिरवान के होत चिकने पात' कहावत को चरितार्थ करता बालक भीवा (बचपन का नाम) बचपन से ही कुशाग्र व तेज बुध्दि का रहा। राम जी का परिवार कबीरपंथी थे, अतः इसका भी प्रभाव बाबाजी के व्यक्तित्व पर पड़ा। जो अदम्य साहस व संघर्ष की दास्तान है। उनका लोकतांत्रिक समाजवादी व्यवस्था जो समतावादी उदारमना से प्रेरित रहा। दलित, शोषित, गरीब, अछूत, तिरस्कृत लोगों के लिए कुरान की तरह है। वह आजादी को कुछ लोंगों या वर्गों तक नहीं, बल्कि संविधान के सहारे सबके लिए 'सर्वजन हिताय व सर्वजन सुखाय' बनाना चाहते थे। समाज में समानता लाने के लिए संविधान में आरक्षण का प्रावधान किया। जिससे भारत के सभी लोग बिना भेदभाव, ऊँच नीच के सर्वागींण विकास कर देश के विकास में अपनी महती भूमिका निभा सके। इसीलिए धर्म आधारित समाज को तोड़कर एक नयी समतामूलक समाज व मानवधर्म पर आधारित भारत का निर्माण चाहते थे। आज बाबा जी के जीवन से प्रेरणा लेने की जरूरत है जिससे विकास हो सके और सच्ची आजादी लोगों तक पहूँचे। भारत देश फिर से सोने का चिडिया और स्वर्ग स्थल की इतिहास को प्राप्त कर सके। इसके लिए आजादी चाहिए, आजादी के लिए शिक्षा और शिक्षित व्यक्ति सर्वाभौमिक रूप से अंततः बुद्ध हो ही जाता है।

डॉ अम्बेडर का जीवन–दर्शन

डॉ भीमराव अम्बेडकर का जन्म तथा बचपन अन्य महापुरुषों के भॉति कष्टमय रहा। तत्कालीन सामाजिक ठेकेदारों ने शिक्षा से वंचित रखने का भरसक प्रयास किया। जैसेः– शाला में प्रवेश न देना, कक्षा में अलग बिठाना, शिक्षक द्वारा कापी–पुस्तक को न छुना, न जॉचना, पानी पीने के लिए अलग कुल्हड़ रखना, किराया देने पर भी गाड़ी पर न बिठाना, गॉवों में दलितों के लिए अलग घाठ–बाट का उपयोग करना, सार्वजनिक जगहों से छूत समझकर अलग रखना, तथा धर्म का अपवित्र होने की बात कर मंदिरों पवित्र स्थान में प्रवेश न करने देना आदि और यह कहना कि यह परम्परा देवताओं ने बनाया है तथा ऐसा कर धर्म के आड़ में अपना स्वार्थ सिध्द करते रहे। तथाकथित अपने को अन्य से उच्चवर्ग के समझने वाला, मानव–मानव में भेदकर नाना तरह से प्रताड़ित करते हुऐ, साहित्य के माध्यम से ज्ञान और समाज में एकाधिकार बनाये रखा। बालक अम्बेडकर के मन पर इन बातों का गहरा प्रभाव पड़ता रहा तथा सोचता कि, क्या वास्तव में यह भेदभाव का जिम्मेदार भगवान या ईश्वर है। क्या व्यक्ति जन्म से ही छोटा–बड़ा, उॅच–नीच, छुआ–अछूत के साथ जन्म लेता है। क्या सभी धर्मो के मूल में यही है। क्या झूठ, पाप, चोरी, फरेबी, धोखा–धड़ी, हिंसा आदि का मार्ग जीवनयापन करने के लिए ईश्वर ने सुझाया है। क्या ऐसा भेदभाव अन्य जीवधारियों– पशु, पक्षी, पेड़–पौधा आदि में भी होता है। क्या मनुष्य का सौभाग्य/दुर्भाग्य किसी और के हाथ में निहित है। क्या यही ईश्वर का सुगम व्यवस्था है। यदि हॉ, तो व्यक्ति निर्दोष व असहाय है और उसे कुछ करने की कोई जरुरत नहीं, न जिम्मेदारी; और यदि नहीं, तो क्या ये कुछ चुनिंदा स्वार्थियों का गुमराह करने की साजिश नहीं। जिससे अपनों का दूसरों से रक्षा– क्षत्रिय, पालन–पोषण– वैश्य, सेवा–शुद्र कराया जा सके। यह तभी संभव है, जब इनको शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, राजनीतिक,

सॉस्कृतिक गुलाम रखा जाय। इन सबके लिए इनको हमेशा शिक्षा से दूर रखने का उपक्रम किया गया। इसके लिए धर्म, रीति–रिवाज, तथा तिथि–त्योहार का स्वार्थमय ढ़ंग से व्याख्या किया गया, तो कभी नैतिक शिक्षा को भी आडम्बर व पाखण्ड से दूषित कर दिया गया। जिससे इन लोगों को शारीरिक व मानसिक गुलाम रखा जा सके।

डॉ भीमराव अम्बेडकर ने इन्हीं परिस्थितियों को अपने ऑखों से देखा और अनुभव किया। तथा इनसे निकलने का मार्ग जीवन भर खोजता रहा। इसी को आज के बुध्दजीवियों ने अम्बेडकरवाद कह देता है। यह कोई वाद नहीं अपितु एक मुहिम Mission है– इन लोगों के समतामूलक सर्वांगीण विकास के लिए, जिससे मानव–मानव एक समान हो तथा स्वेच्छा से जीवनयापन करने का साधन व अवसर समान रुप से मिल सके। यही सच्ची आजादी है। इसके लिए बाबा साहब ने सबसे पहले इतना शिक्षा प्राप्त किया कि वह तर्क कर सके और पूर्ण सत्य तक पहुॅचा जा सके। क्योंकि ज्ञान से ही इन सभी विसंगतियों से मुक्ति संभव है और फिर प्रेमपूर्वक, भाई–चारा, अपनापन के साथ रह सके। ज्ञान और प्रेम का समन्वय ही उत्कृष्ट जीवनशैली है।

अम्बेडकरवाद एक मिशन

डॉ भीमराव अम्बेडकर जी ने जिस समाज को देखा और जीया वह त्रासदमय रहा। समाज विभिन्न जाति, वर्ग, समुदाय तथा धर्म में बॅटा हुआ था तथा लोग एक–दूसरे को हेय दृष्टि से देखते थे। विकास करने के चक्कर में पड़कर सामाजिक ठेलमठेल हो रहा था; फलस्वरुप, कोई भी आगे नहीं बढ़ पा रहा था। सरेआम शिक्षा, स्वास्थ्य, शील का पतन हो रहा था। धर्म के जगह पर आडम्बर ने स्थान ले लिया था और कल्पना के गोद में लोग सुखद स्वप्न देख रहे थे, मानो यही जीवन का सार हो; जो मिथ्या था। समाज–व्यवस्था चरमरा गया था। ऐसी परिथिति में सुख और विकास दूर की कौड़ी लग रहा था। तब अम्बेडकर ने दलित, शोषित लोगों के लिए समाज में उचित स्थान दिलाने हेतु एक मुहिम चलाया। जिसके लिए शिक्षा पर सर्वाधिक जोर दिया और कहा कि सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्यगत, शीलता का ह्रास आदि विषमता का मूल कारण अनपढ़ होना है, अशिक्षित होना है। इसका प्रभाव व्यक्ति, घर, परिवार, समाज, देश पर सीधा पड़ता है। बाबा जी का मिशन कोई जाति, वर्ग, सम्प्रदाय, धर्म तक नहीं, वरन् बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय पर आधारित है। परन्तु कुछ स्वार्थियों ने इसे भारत के मूल निवासियों को गुमराह करते हुए जाति, सम्प्रदाय, धर्म से जोड़कर साहित्य के माध्यम से शारीरिक व मानसिक शोषण किया। अतः तत्कालीन साहित्य में पढ़ने–लिखने को अलौकिक अर्थात भगवान या ईश्वर द्वारा आदेश बताकर इन अधिकारों से दलित, शोषित वर्गों को हमेशा षड़यंत्र के तहत दूर रखा गया। इन्हीं कारण सामान्य जनता अनपढ़ होकर भीरुता से एवं साक्षर होकर तथाकथित उच्चवर्गीय ज्ञानियों के भॅवरजाल में फॅसे रहे। जो विकास में सबसे बड़ा बाधक सिध्द हुआ और देश गुलाम रहा। इसी तरह के दूषित परिवेश को ठीक करने के लिए बाबा जी ने कार्य किया। जिससे देश और समाज में सद्भावना व एकता बनीं रहे।

आज देश में आजादी के बाद भी इस मुहिम अथवा अभियान के लिए इन वर्गों के बीच जन आन्दोलन की आवश्यकता है। जिससे हजार वर्षों के शोषण से मुक्ति मिले और लोगों का समुचित व समन्वित विकास समय अनुरुप हो सके। इसके लिए निम्नवत् प्रावधान हो–

1. संविधान में विशेष दर्जा हो।
2. पूर्वाग्रह से ग्रसित लोगों के साथ कठोरता से कार्यवाही किया जाय।
3. संवैधानिक प्रावधान तथा योजनाओं की जानकारी लाभार्थी तक समय पर पहुॅचाने की जिम्मेदारी संबंधित नेता, अधिकारी/कर्मचारी को दिया जाय।
4. आरक्षितों को किसी भी कार्य, जो कर्त्तव्य से परे हो, को करने के लिए बाध्य न किया जाय और न ही उकसाया जाय। इसके लिए सतत् निगरानी की जरुरत ळें
5. शासकीय सेवकों की नियुक्ति, पदोन्नति, पेंशनादि समय पर मिले, इसकी विशेष ध्यान रखा जाय।
6. सार्वजनिक स्थलों पर, किसी भी तरह से अहैतुक शब्द, कार्य, व्यवहार न किया जाय। जिससे किसी भी प्रकार से अपमान या हानि होती हो।
7. कार्य में अनावश्यक गतिरोध न हो। जिससे आरक्षित वर्गों के भविष्य प्रभावित होता हो।
8. शासकीय और सार्वजनिक जगहों में, संस्थाओं, निगमों, विभागों, होटल, रेस्त्रां आदि में किसी भी तरह से भेदभाव हो।
9. संवैधानिक प्रावधानों का कड़ाई से पालन होना सुनिश्चित किया जाय।
10. शिक्षा का समुचित व्यवस्था हो।
11. कार्यपालिका, व्यवस्थापिका तथा न्यायपालिका में समान भगीदारी सुनिश्चित हो।

अम्बेडरवाद मिशन का समसामयिक स्वरुप

आज 21 वीं सदी में जिसे विज्ञान का युग कहा जा रहा हो, तब ज्ञान के सही स्वरुप का परिज्ञान व प्रचार–प्रसार का होना भी अनिवार्य हो जाता है। जिससे सत्य का बोध सुगम तथा सर्वजनिन हो सके। सुख का आधार दुःख है, तब दुःख को समझने के लिए सत्य का ज्ञान होना ही चाहिए। मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर जैसे पवित्र स्थानों को दूषित करने का श्रेय इनके नियंताओं को ही जाता है। संत, भक्त, ज्ञानी, महात्मा, जोगी–जती, संन्यासी सबके सब स्वार्थी हो, ज्ञान का विभाजन व वर्गीकरण किया। तथा भगवान/ईश्वर जैसे पदनाम को भी जीविकोपार्जन के लिए हथिया लिया और अपने को श्रेष्ठ बनाने के लिए जाति, वर्ग, सम्प्रदाय व धर्म के आधार पर समाज को समनांतर के बजाय उर्ध्वाधर बॉटने का काम किया। जो आज भी जारी है– ये ऐसा दाग है जिससे मानवता कलंकित होता रहा है, एक ऐसा ज़हर है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि एक दिन गल जायेगा। आज साहित्य, दर्शन, धार्मिक कृत्य व व्यवहार आदि में कल्पना व रुढ़िवादिता के कारण विकासात्मक बदलाव नहीं हो पा रहा है। तथा पाखण्ड, दिखावा, और आडम्बर में गुमराह हो, हम ज्ञान–विज्ञान के साधनों, अविष्कारों, भौतिक संसाधनों का पुरातन मोह वश नई वैज्ञानिक सोच के साथ अंतःसंबंध बिठाने में असमर्थ हैं।

डॉ. अम्बेडकर ने सामाजिक सद्भावना के लिए वर्तमान में व्याप्त इन्हीं भेदभाव को घातक मानते हुए सदैव समाज के नीचे दबे एवं कुचले लोगों को ध्यान में रखकर कार्य करते हुए, संवैधानिक व्यवस्था दिया कि राज्य के सामने कोई भी व्यक्ति में कोई अंतर नहीं, परन्तु वर्तमान में व्याप्त भेदभाव को जो कि सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सॉस्कृतिक रुप आदि में व्याप्त है, पूर्ण समाप्त हो, समाज में समानता, समरसता, समन्वय न हो जाय, तब तक आरक्षण मिलता रहे। उन्होंने राजनैतिक एकता अर्थात आजादी के लिए सामाजिक व धार्मिक एकता व समानता को अनिवार्य मानते थे। जिससे आर्थिक सम्पन्नता आ सके। सामयिक संदर्भ में जब राजपद के लिए साम, दाम, दण्ड, भेद नीति का वर्चस्व होता जा रहा हो। अम्बेडकर का मिशन अपरिहार्य और प्रासांगिक हो जाता है। अम्बेडकर की नीति अर्थात शिक्षा को जब तक मुख्य धारा में नहीं लाया जायेगा, तब तक समाज में समता, शांति, सौहार्द्र एवं संपन्नता नहीं आ पायेगा और विकास एक कोरी कल्पना होगी।

ज्ञान के एकाधिकार को तोड़ सर्वजनिन करना ही होगा। इसके लिए Right to Education शिक्षा का अधिकार एक मील का पत्थर भविष्य में साबित होगा। पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक तथ्यों, तर्कों, सिध्दांतों, अविष्कारों, संस्थाओं को अधिकाधिक शामिल किया जाय। जिससे शिक्षा के माध्यम से नई दृष्टिकोण पनप सके। व्यक्ति, समाज, देश का समुचित विकास हो सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ भीमराव अम्बेडकर : व्यक्तित्व के कुछ पहलू – मोहन सिंह
2. डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर – वसंत मून
3. डॉ भीमराव अम्बेडकर – आबिद रिजवी
4. अछूत कौन और कैसे – डॉ भीमराव अम्बेडकर
5. क्या कहते हैं दलितों के मसीहा – कमलाकांत
6. जाति भेद का उच्छेद – डॉ भीमराव अम्बेडकर
7. हिन्दू धर्म की पहेलिया – डॉ भीमराव अम्बेडकर
8. अम्बेडकर और ओशो – आचार्य स्वामी ध्यान संदेश, 2014।
9. गुलामगिरी – महात्मा ज्योतिबा फूले,
10. नागपुर का धम्मोपदेश – बाबा साहेब अम्बेडकर
11. डॉ अम्बेडकर का पत्र – भागीरथ
12. हिन्दू धर्म की रिडलस् –डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
13. डॉ अम्बेडकर के प्रेरक भाषण भाग–1 –विनय कुमार वासनिक
14. हिन्दूज्म का दर्शन – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
15. रानाडे, गॉधी और जिन्ना – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
16. वीसा की प्रतिक्षा में – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
17. डॉ अम्बेडकर की साक्षी साउथ ब्रउनो के समक्ष – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
18. काठमाण्उॅ का भाषण – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
19. गॉधी और अछूत विमुक्ति – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
20. सम्प्रदायिक गुत्थी और उसे हल करने का उपाय – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
21. जातिभेद का बीज नाश – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
22. अछूत कौन और कैसे ? – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
23. भारत का संविधान – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
24. डॉ बाबा साहब अम्बेडकर जीवन संघर्ष एवं राष्ट सवाऐ – शंकरानेद शास्त्री
25. शूद्रों की खोज – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
26. संघ बनाम स्वतंत्रता – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
27. कांग्रेस और गाधी ने अछूतों के लिए क्या किया –डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर
28. प्राचीन भारत में क्रांति एवं प्रतिक्रांति – डॉ बाबा साहेब अम्बेडकर